15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अपने कैरेक्टर्स सुधारने के लिए याद की यात्रा में रहना है, बाप की याद ही तुम्हें सदा सौभाग्यशाली बनायेगी"

प्रश्नः- अवस्था की परख किस समय होती है? अच्छी अवस्था किसकी कहेंगे?

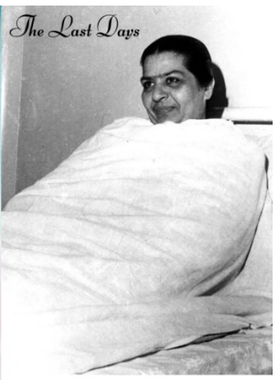

Mumbai (1965): Mamma in Hospital.

उत्तरः- अवस्था की परख बीमारी के समय होती है। बीमारी में भी खुशी बनी रहे और खुशमिज़ाज़ चेहरे से सबको बाप की याद दिलाते रहो, यही है अच्छी अवस्था। अगर खुद रोयेंगे, उदास होंगे तो दूसरों को खुशमिज़ाज़ कैसे बनायेंगे? कुछ भी हो जाए - रोना नहीं है।

ओम् शान्ति। दो अक्षर गाये जाते हैं - दुर्भाग्यशाली और सौभाग्यशाली। सौभाग्य चला जाता है तो दुर्भाग्य कहा जाता है। स्त्री का पति मर जाता है तो

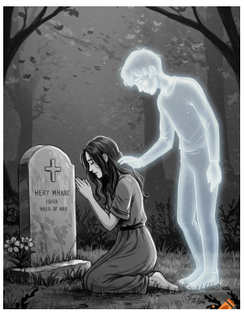

15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वह भी दुर्भाग्य कहा जाता है। अकेली हो जाती है। अभी तुम जानते हो हम सदा के लिए सौभाग्यशाली बनते हैं। वहाँ दु:ख की बात नहीं।

मृत्यु का नाम नहीं होता है। विधवा नाम ही नहीं होता। विधवा को दु:ख होता है, रोती रहती है। भल साधू-सन्त हैं, ऐसा नहीं कि उन्हें कोई दु:ख नहीं होता है। कोई पागल बन पड़ते हैं, बीमार रोगी भी होते हैं। यह है ही रोगी दुनिया। सतयुग है निरोगी दुनिया। तुम बच्चे समझते हो हम भारत को फिर से श्रीमत पर निरोगी बनाते हैं। इस समय मनुष्यों के कैरेक्टर्स बहुत खराब हैं। अब कैरेक्टर्स सुधारने की भी जरूर डिपार्टमेंट होगी। स्कूलों में भी स्टूडेण्ट्स का रजिस्टर रखा जाता है। उनके कैरेक्टर्स का पता चलता है इसलिए बाबा ने भी रजिस्टर रखवाया था। हर एक अपना रजिस्टर रखो। कैरेक्टर देखना है कि हम कोई भूल तो नहीं करते हैं। पहली बात तो बाप को याद करना है। उनसे ही तुम्हारा कैरेक्टर्स सुधरता है। आयु भी बड़ी होती है एक की याद से। यह तो हैं ज्ञान रत्न। याद को रत्न नहीं कहा जाता। याद से ही तुम्हारे

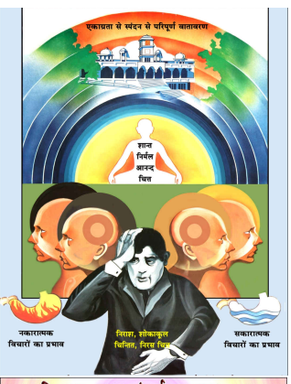

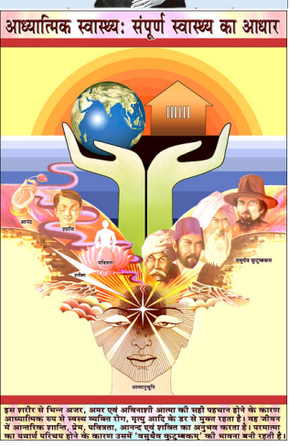

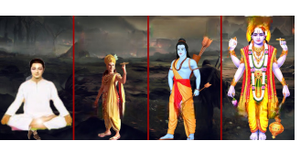

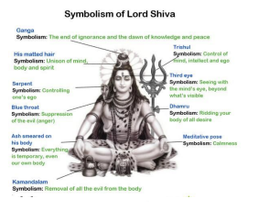

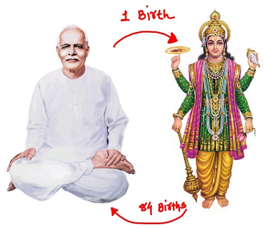

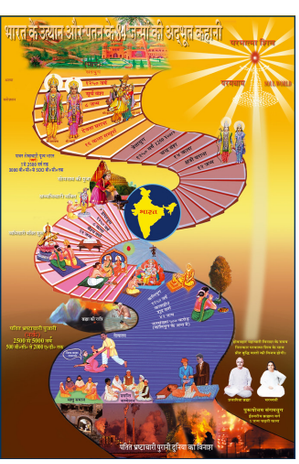

कैरेक्टर सुधरते हैं। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाए और कोई समझा न सके। इस पर ही समझाना है - विष्णु और ब्रह्मा। शंकर के तो कैरेक्टर नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या कनेक्शन है। विष्णु के दो रूप हैं यह लक्ष्मी-नारायण। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में आपेही पूज्य और आपेही पुजारी बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही चाहिए ना। साधारण तन चाहिए। बहुत करके इसमें ही मूँझते हैं। ब्रह्मा तो है ही पतित-पावन बाप का रथ। कहते भी हैं - दूरदेश का रहने वाला आया देश पराये..... पावन दुनिया बनाने वाला पतित-पावन बाप पतित दुनिया में आया। पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं हो सकता। अभी तुम बच्चों ने समझा है कि 84 जन्म हम कैसे लेते हैं। कोई तो लेते होंगे ना। जो पहले-पहले आते होंगे उनके ही 84 जन्म होंगे। सतयुग में देवी-देवता ही आते हैं। मनुष्यों का ज़रा भी ख्याल नहीं चलता, 84 जन्म कौन लेंगे। समझ की बात है। पुनर्जन्म तो सब मानते हैं। 84 पुनर्जन्म हुए यह बड़ी युक्ति

से समझाना है। 84 जन्म तो सभी नहीं लेंगे ना। एक साथ सब थोड़ेही आयेंगे और शरीर छोड़ेंगे।

श्रीभगवानुवाच Adhyay:4
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥
श्रीभगवान् बोले—हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूँ॥५॥

भगवानुवाच भी है कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, भगवान ही बैठ समझाते हैं। तुम आत्मायें 84 जन्म लेती हो। यह 84 की कहानी बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं। यह भी एक पढ़ाई है। 84 का चक्र तो जानना बहुत सहज है। दूसरे धर्म वाले इन बातों को समझेंगे नहीं। तुम्हारे में भी कोई सभी 84 जन्म नहीं लेते हैं। सभी के 84 जन्म हों तो सब इकट्ठे आ जाएं। यह भी नहीं होता है। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। उसमें भी नम्बरवन है याद। डिफीकल्ट सब्जेक्ट पर मार्क्स जास्ती मिलती हैं। उनका प्रभाव भी होता है। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट सब्जेक्ट होती हैं ना। इनमें हैं दो मुख्य। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और फिर विजय माला में पिरो जायेंगे। यह है रेस। पहले तो खुद को देखना है कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ? कितना याद करता हूँ? मेरे कैरेक्टर्स कैसे हैं? अगर मेरे में ही रोने की आदत है तो दूसरे को

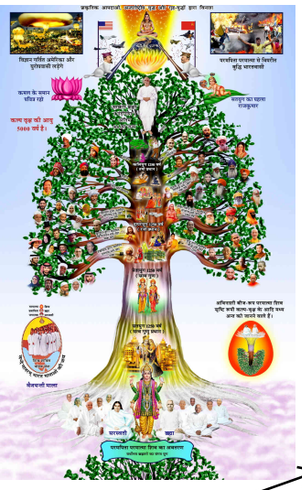

Mind It...

Self as a Soul – Gyan
God as Father – Yoga

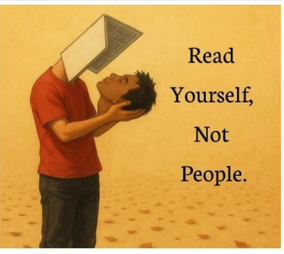

At Any COST

खुशमिज़ाज़ कैसे बना सकता हूँ? बाबा कहते हैं जो रोते हैं सो खोते हैं। कुछ भी हो जाए लेकिन रोने की दरकार नहीं है। बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है। तकलीफ में थोड़ा कुड़कने की आवाज़ भल निकलती है परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ने पैगाम दिया है। पैगम्बर-मैसेन्जर एक शिवबाबा है, दूसरा कोई है नहीं। बाकी जो भी सुनाते हैं, सारी भक्ति मार्ग की बातें। इस दुनिया की जो भी चीज़ें हैं सब विनाशी हैं, अभी तुमको वहाँ ले जाते हैं जहाँ टूट-फूट नहीं। वहाँ तो चीज़ें ही ऐसी अच्छी बनेंगी जो टूटने का नाम ही नहीं होगा। यहाँ साइन्स से कितनी चीज़ें बनती हैं, वहाँ भी तो साइंस जरूर होगी क्योंकि तुम्हारे लिए बहुत सुख चाहिए। बाप कहते हैं तुम बच्चों को कुछ भी पता नहीं था। भक्ति मार्ग कब शुरू हुआ, कितना तुमने दु:ख देखा - यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। देवताओं को कहा ही जाता है - सर्वगुण सम्पन्न....

Point to be Noted

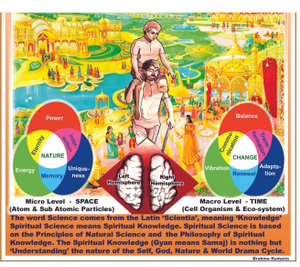

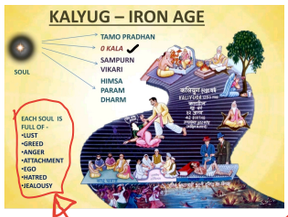

फिर वह कलायें कैसे कम हुई? अभी तो कोई कला नहीं रही है। चन्द्रमा की भी धीरे-धीरे कला कम होती है ना।

तुम जानते हो कि यह दुनिया भी पहले नई है तो वहाँ हर चीज़ सतोप्रधान फर्स्टक्लास होती है। फिर पुरानी होते कलायें कम होती जाती हैं। सर्वगुण सम्पन्न यह लक्ष्मी-नारायण हैं ना। अभी बाप तुमको सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। अभी है रात फिर दिन होता है। तुम सम्पूर्ण बनते हो तो तुम्हारे लिए फिर सृष्टि भी ऐसी ही चाहिए। 5 तत्व भी सतोप्रधान (16 कला सम्पूर्ण) बन जाते हैं इसलिए शरीर भी तुम्हारे नेचुरल ब्युटीफुल होते हैं। सतोप्रधान होते हैं। यह सारी दुनिया 16 कला सम्पूर्ण बन जाती है। अभी तो कोई कला नहीं है, जो भी बड़े से बड़े लोग हैं अथवा महात्मा आदि हैं, यह बाप की नॉलेज उनकी तकदीर में ही नहीं है। उन्हों को अपना ही

How Great we are...!

प्रकृति के पाँच तत्वों का आधार मानव प्रकृति (स्वभाव) पर है। जब मानव स्वभाव सुखदायी व सतोप्रधान होता है तो पाँच तत्व भी मनुष्य को सुख व आनन्द प्रदान करते हैं।

घमण्ड है। बहुत करके है ही गरीबों की तकदीर में। कोई कहते हैं इतना ऊंच बाप है, उनको तो कोई बड़े राजा अथवा पवित्र ऋषि आदि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं संन्यासी। बाप बैठ समझाते हैं मैं किसमें आता हूँ। मैं आता ही उसमें हूँ जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। एक दिन भी कम नहीं। श्रीकृष्ण पैदा हुआ उस समय से 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। हर चीज़ पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आती है।

Point to be Noted

सतयुग में भी ऐसा होता है। बच्चा सतोप्रधान है फिर बड़ा होगा तो कहेगा अब हम यह शरीर छोड़ सतोप्रधान बच्चा बनता हूँ। तुम बच्चों को इतना नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी मेहनत करते हैं, खुशी का पारा चढ़ता रहता है। शक्ल भी खुशनुम: रहती है। आगे चल तुमको साक्षात्कार होते रहेंगे। जैसे घर के नज़दीक आकर पहुँचते हैं तो फिर वह घरबार मकान आदि याद आता है ना। यह भी ऐसे है। पुरुषार्थ करते-करते तुम्हारी प्रालब्ध जब नज़दीक होगी तो फिर बहुत साक्षात्कार होते रहेंगे। खुशी में रहेंगे। जो नापास

उल्हना (complaint) of Baba

Example

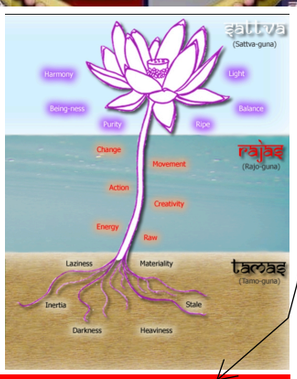

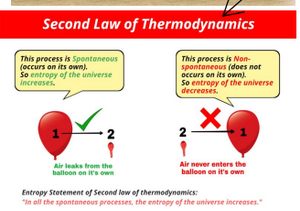

Coming soon...

होते हैं तो शर्म के मारे डूब मरते हैं। तुमको भी बाबा बता देते हैं फिर बहुत पछताना पड़ेगा। अपने भविष्य का साक्षात्कार करेंगे, हम क्या बनेंगे? बाबा दिखलायेंगे यह-यह विकर्म आदि किये हैं। पूरा पढ़े नहीं, ट्रेटर बनें, इसलिए यह सज़ा मिलती है। सब साक्षात्कार होगा। बिगर साक्षात्कार सज़ा कैसे देंगे? कोर्ट में भी बताते हैं - तुमने यह-यह किया है, उसकी सज़ा है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाए तब तक कुछ न कुछ निशानी रहेगी।

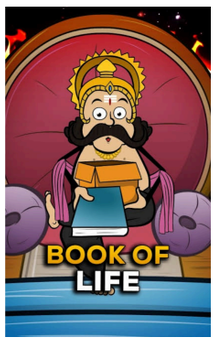

Point to be Noted

आत्मा पवित्र हो जाती है फिर तो शरीर छोड़ना पड़े। यहाँ रह न सकें। वह अवस्था तुमको धारण करनी है। अभी तुम वापिस जाए फिर नई दुनिया में आने के लिए तैयारी करते हो। तुम्हारा पुरुषार्थ ही यह है कि हम जल्दी-जल्दी जायें, फिर जल्दी-जल्दी आयें।

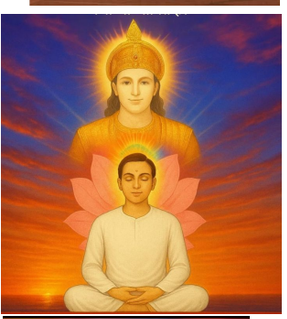

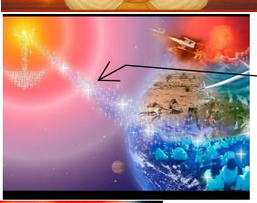

Example

जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। निशान तक जाकर फिर लौट आना है। तुमको भी जल्दी-जल्दी जाना है, फिर पहले नम्बर में नई दुनिया में आना है। तो तुम्हारी रेस है यह। स्कूल में भी रेस कराते हैं ना। तुम्हारा है यह प्रवृत्ति मार्ग। तुम्हारा पहले-पहले पवित्र गृहस्थ धर्म था।

Points: ज्ञान योग धारणा सेव

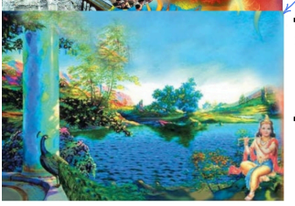

15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभी है विशश फिर वाइसलेस वर्ल्ड बनेगा। इन बातों को तुम सिमरण करते रहो तो भी बहुत खुशी रहेगी। हम ही राज्य लेते हैं फिर गँवाते हैं। हीरो-हीरोइन कहते हैं ना। हीरे जैसा जन्म लेकर फिर कौड़ी जैसे जन्म में आते हैं।

कबीर सो धन संचे,
जो आगे को होय.
सीस चढ़ाए पोटली,
ले जात न देख्यो कोय.
अर्थ : SmitCreation.com
कबीर कहते हैं कि उस धन को इकट्ठा करो जो भविष्य में काम आए. सर पर धन की गठरी बाँध कर ले जाते तो किसी को नहीं देखा.

Experience of Sweet Brahma baba

Now a days Share Market/cripto

Click

अभी बाप कहते हैं - तुम कौड़ियों पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। यह (Brahmababa) कहते हैं हम भी टाइम वेस्ट करते थे। तो हमको भी कहा अब तो तुम मेरा बनकर यह रूहानी धंधा करो। तो झट सब कुछ छोड़ दिया। पैसे कोई फेंक तो नहीं देंगे। पैसे तो काम में आते हैं। पैसे बिना कोई मकान आदि थोड़ेही मिल सकता। आगे चल बड़े-बड़े धनवान आयेंगे। तुमको मदद देते रहेंगे। एक दिन तुमको बड़े-बड़े कॉलेज, युनिवर्सिटी में भी जाकर भाषण करना होगा कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। हिस्ट्री रिपीट होती है आदि से अन्त तक। गोल्डन एज से आइरन एज तक सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

हम बता सकते हैं। कैरेक्टर्स के ऊपर तो तुम बहुत समझा सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण की महिमा करो। भारत कितना पावन था, दैवी कैरेक्टर्स थे। अब तो विशश कैरेक्टर्स हैं। जरूर फिर चक्र रिपीट होगा। हम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुना सकते हैं। वहाँ जाना भी अच्छे-अच्छे को चाहिए। जैसे थियोसोफिकल सोसायटी है, वहाँ तुम भाषण करो। श्रीकृष्ण तो देवता था, सतयुग में था। पहले-पहले है श्रीकृष्ण जो फिर नारायण बनते हैं। हम आपको श्रीकृष्ण के 84 जन्मों की कहानी सुनायें, जो और कोई सुना न सके। यह टॉपिक कितनी बड़ी है। होशियार को भाषण करना चाहिए।

कापारी खुशी

अभी तुम्हारे दिल में आता है, "हम विश्व के मालिक बनेंगे," कितनी खुशी होनी चाहिए। अन्दर बैठ यह जाप जपो फिर तुमको इस दुनिया में कुछ भासेगा नहीं। यहाँ तुम आते ही हो - विश्व का मालिक बनने - परमपिता परमात्मा द्वारा। विश्व तो इस

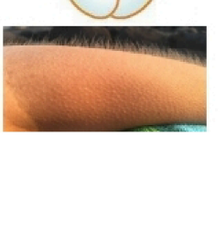

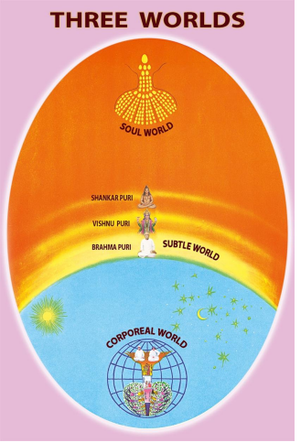

15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

दुनिया को ही कहा जाता है। ब्रह्मलोक वा सूक्ष्मवतन को विश्व नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। इस विश्व का मालिक तुम बच्चों को बनाता हूँ। कितनी गुह्य बातें हैं। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। फिर तुम माया के दास बन जाते हो। यहाँ जब सामने योग में बिठाते हो तो भी याद दिलानी है - आत्म-अभिमानी हो बैठो, बाप को याद करो। 5 मिनट बाद फिर बोलो। तुम्हारे योग के प्रोग्राम चलते हैं ना। बहुतों की बुद्धि बाहर चली जाती है इसलिए 5 -10 मिनट बाद फिर सावधान करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बैठे हो? बाप को याद करते हो? तो Advantage खुद का भी अटेन्शन रहेगा। बाबा यह सब युक्तियां बतलाते हैं। घड़ी-घड़ी सावधान करो। अपने को आत्मा समझ शिवाबाबा की याद में बैठे हो? तो जिनका बुद्धियोग भटकता होगा वह खड़े हो जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद दिलाना चाहिए। बाबा की याद से ही तुम उस पार चले जायेंगे। गाते भी हैं खिवैया, नईया मेरी पार लगाओ। परन्तु अर्थ को नहीं जानते। मुक्तिधाम में

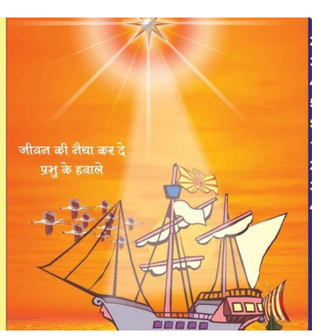

mind well — याद करो...

15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जाने के लिए आधाकल्प भक्ति की है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। तुम बैठते ही हो पाप कटने लिए तो फिर पाप करने थोड़ेही चाहिए। नहीं तो फिर पाप रह जायेंगे। नम्बरवन यह पुरुषार्थ है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे सावधान करते रहने से Double Advantage अपना भी अटेन्शन रहेगा। खुद को भी सावधान करना है। खुद भी याद में बैठे तब औरों को बिठायें। हम आत्मा हैं, जाते हैं अपने घर। फिर आकर राज्य करेंगे। अपने को शरीर समझना - यह भी एक कड़ी बीमारी है इसलिए ही सब रसातल में चले गये हैं। उनको फिर सैलवेज करना है। अच्छा!

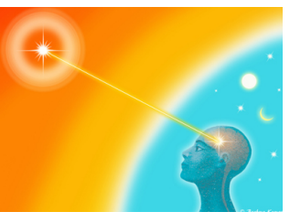

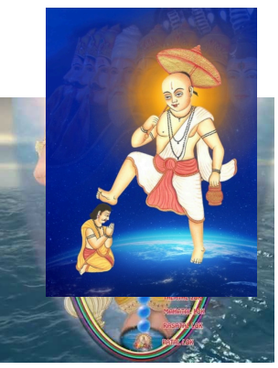

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

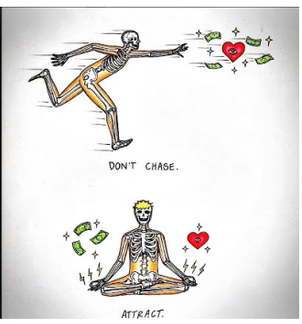

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपना टाइम रूहानी धन्धे में सफल करना है। हीरे जैसा जीवन बनाना है। अपने को सावधान करते रहना है। शरीर समझने की कड़ी बीमारी से बचने का पुरुषार्थ करना है।

Never Ever

2) कभी भी माया का दास नहीं बनना है, अन्दर में बैठ जाप जपना है कि हम आत्मा हैं। खुशी रहे हम बेगर से प्रिन्स बन रहे है।

15-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

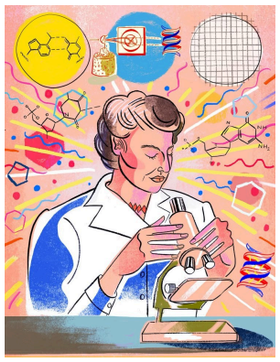

वरदान:- अनुभवों के गुह्यता की प्रयोगशाला में रह नई रिसर्च करने वाले अन्तर्मुखी भव

जब स्वयं में पहले सर्व अनुभव प्रत्यक्ष होंगे तब प्रत्यक्षता होगी

- इसके लिए अन्तर्मुखी बन याद की यात्रा व हर प्राप्ति की गुह्यता में जाकर रिसर्च करो, संकल्प धारण करो और फिर उसका परिणाम वा सिद्धि देखो कि जो संकल्प किया वह सिद्ध हुआ या नहीं?

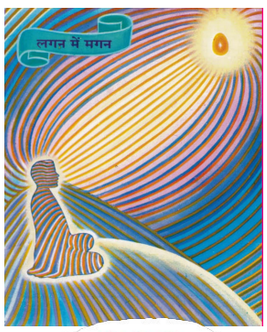

ऐसे अनुभवों के गुह्यता की प्रयोगशाला में रहो जो महसूस हो कि यह सब कोई विशेष लगन में मगन इस संसार से उपराम हैं।

कर्म करते योग की पावरफुल स्टेज में रहने का अभ्यास बढ़ाओ।

जैसे वाणी में आने का अभ्यास है ऐसे रूहानियत में रहने का अभ्यास डालो।

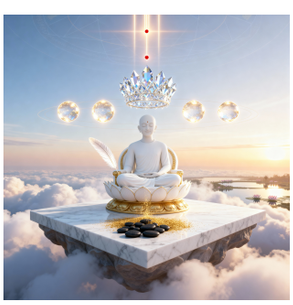

स्लोगन:- सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर परिस्थितियों का खेल देखने वाले ही सन्तुष्टमणि हैं।

Points: ज्ञान

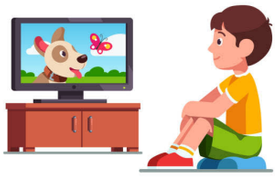

सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

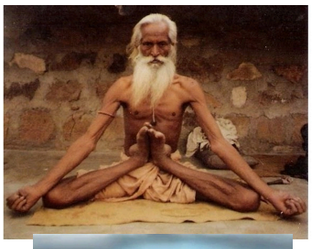

अशरीरी व विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ

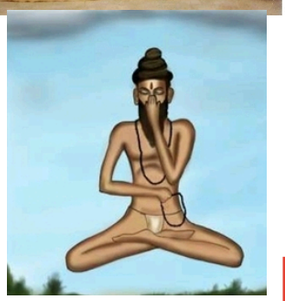

जैसे हठयोगी अपने श्वांस को जितना समय चाहें उतना समय रोक सकते हैं।

आप सहजयोगी, स्वत: योगी, सदा-योगी, कर्म-योगी, श्रेष्ठ-योगी अपने संकल्प को, श्वांस को प्राणेश्वर बाप के ज्ञान के आधार पर जो संकल्प, जैसा संकल्प जितना समय करना चाहो उतना समय उसी संकल्प में स्थित हो जाओ।

अभी-अभी शुद्ध संकल्प में रमण करो, अभी-अभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन की, एक ही अशरीरी बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ।

Om shanti, mein pichle 4 saal se highlighted murli padhti hu, mujhe bahut achha lagta h ise padhna. Isme jo emoji hote h unhe dekhkar murli ka point easily yaad bhi rehta h aur ek emotion bhi jud jata h uske saath, murli me jo link diye hote h vo bhi bahut useful hote h.
Mera ye suggestion h ki abhi baba ne sunday ki murli k vardan me kaha ki jab vinashkal bhulta h to hum albele ho jate h, to vinashkal par chali murli k pages ya link bhi daily murli k saath dale jae jisse hum alert rahe. Sister BK kusum aur unki team ka aur Baba ka bahut bahut shukriya🙏🥰🥰 om shanti

--- Manju Sharma ;Gyan:6yrs.; From:- Rewari Haryana

वरदान of 23/3/2025

यह हम जो फाइनल पेपर और धर्मराज की पॉइंट्स हर रोज पढ़ते हैं उसका श्रेय इस feedback को जाता है इनका तहे दिल से शुक्रिया

32

अपने उपर रहम ओर, औरों के उपर रहम। भक्ति मार्ग में भी सच्चे भक्त होंगे वा आप भी सच्चे भक्त बने हो, आत्मा में रिकार्ड भरा हुआ है ना। तो सच्चे भक्त सदा रहमदिल होते हैं इसलिए वे पाप कर्म से डरते हैं। तो ज्ञान मार्ग में भी जो यथार्थ रहमदिल हैं - उसमें 3 बातों से किनारा करने की शक्ति होती है। जिसमें रहम नहीं होता वे समझते हुए (1) जानते हुए (2) तीन बातों के परवश बन जाते (3) हैं। वह तीनों बातें हैं। - अलबेलापन, ईर्ष्या और घृणा। कोई भी कमजोरी वा कमी का कारण 90 प्रतिशन यह तीनों बाते होती हैं। तो जो रहमदिल होगा वह बाप के साथी धर्मराज की सजा से किनारा करने की शुभ इच्छा रखते हैं। जैसे भक्त डर के मारे अलबेले नहीं होते, ... ब्राह्मण आत्माएँ बाप के प्यार के कारण धर्मराज पुरी से क्रास न करना पड़े - इस मीठे डर से अलबेले नहीं होते हो। बाप का प्यार उससे किनारा करा देता है। अपने दिल का रहम अलबेलापन समाप्त कर देता है। ओर जब अपने प्रति रहम भावना आती है तो जैसी वृत्ति, जैसी स्मृति, वैसी सर्व ब्राह्मण सृष्टि के प्रति स्वतः ही रहमदिल बनते हैं। यह है - 'यथार्थ ज्ञान युक्त रहम' बिना ज्ञान के रहम कभी नुकसान भी करता है। लेकिन ज्ञानयुक्त रहम कभी भी

m.m.m. Imp. Note it down

Very Subtle Point to understand

जहाँ दया तहाँ धर्म है,
जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है,
जहाँ क्षमा तहाँ आप।।

May I have your Attention Please..!

42

15/11/25 धर्मराज

किसी आत्मा के प्रति ईर्ष्या वा घृणा का भाव दिल में उत्पन्न नहीं देगा।

(30.03.1990)

Very Very Very Subtle Point to Understand:

कोई भी कमी कमजोरी का कारण - 1. अलबेलापन 2. ईर्ष्या और 3. घृणा

और ये तीनों उत्पन्न होने का कारण रहम की कमी

AV: 30/3/90

यह हम जो अमृतवेला की पॉइंट्स हर रोज पढ़ते हैं उसका
श्रेय इस feedback को जाता है
इनका तहे दिल से शुक्रिया

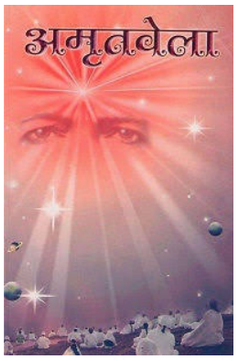

8.2.8 प्राप्तियों के महत्व को पहचान, पूर्ण फ़ायदा उठाओ और ज्ञान-रत्न धारण करो :

(अ) आज चारों ओर के रूहानी हंसों व होली हंसों के संगठन को देख रहे हैं। सभी होली हंस सदा ज्ञान-रत्न ग्रहण करते और कराते हैं। हंसों का भोजन अमूल्य मोती होता है। ऐसे ही आप सब होली हंसों के बुद्धि का भोजन ज्ञान-रत्न हैं। अमृतवेले से बापदादा के साथ रूह-रूहान द्वारा, रूहानी मिलन द्वारा ज्ञान-रत्नों को धारण करते हो, शक्तियों को धारण करते हो। ऐसे ही सारा दिन मनन शक्ति द्वारा धारण किये हुए रत्नों को व शक्तियों को अपने जीवन में धारण कर, औरों को कराते हो ?अमृतवेले मिलन मनाने की शक्ति, ग्रहण करने अर्थात् धारण करने की शक्ति बाप द्वारा हर रोज़ के विशेष शुद्ध संकल्प रूपी प्रेरणा को कैच

15/11/25

करने की शक्ति सबसे ज़्यादा आवश्यक है। अमृतवेले के समय हरेक धारण करने की शक्ति द्वारा धारणामूर्त बन जाते हैं।